Khamoshi

Silence is Golden

A Hindi novel that is set in British India.

Dr Ram Lakhan Prasad & Mrs. Saroj Kumari Prasad

2010

खामोशी

राम लखन प्रसाद

और

सरोज कुमारी प्रसाद

प्रकाशित

५ मई २०११

Other publications by the authors:

- **Explorations in Business Administration**
- **Human Resources Management**
- **History and Development of Education in Fiji**
- **A Handbook for Parents**
- **Motivation Towards 2000**
- **Selling Tactfully- A Customer Driven Approach**
- **Moving Ahead**
- **Bhavnaon Se Bharpur Rachnayen –Hindi**
- **My Roots- From Basti to Botini**
- **Pyar Ka Bandhan – Hindi**
- **Multiple Short Stories and Poems**

Copyright © Dr Ram Lakhan & Mrs. Saroj Prasad

76 Ghost Gum Street Bellbowrie Qld 4070 Australia

srlprasad@bigpond.com

Publishers SLP Publications Brisbane
2011

Acknowledgements

- My Saroj, for everything from writing and encouragement to proof reading and editing.
- Our children, Praanesh, Ranitta, Praneeta, Shalendra, Harshita, Naresh, Rohitesh and Tania, for sharing their ideas with us.
- Our grand children, Jaya, Meera, Hamish, Jayden, Anjali, Sonali, Elliott and Charlotte for their unconditional love and support.
- Our friends, too many to mention by name, for their varied opinions.
- For all our teachers, who provided us the vehicle and tool to write and keep writing.

Dr Ram Lakhan Prasad & Mrs Saroj Kumari Prasad

Bellbowrie, Brisbane, Australia.

१

यह कहानी हमारे आजा सरजू महाजन ने हम को सारांश में १९५० में बताया था और यह हमारे मस्तिस्क में तब से पल और गूँज रही थी । मेरे आजा उत्तरप्रदेश के निवासी थे । हो सकता है कि मैं इस में की कुछ कड़ियों को भूल गया हूँ । यह भी मुमकिन है कि मैं इस में कुछ अपनी भी जोड़ कर इस को और भी दिलचस्प बनाने की कोशिश की है । जो भी कुछ हो यह कहानी में जितना इतिहासिक सत्य है ठीक उतना ही इस में हमारी कलपना भी छिपी हुई है ।

यह तो मानी हुई बात है कि हमारा शरीर बिना जीव के एक खाली बरतन के तरह है जिस का कोई मोल नहीं है और ना ही उस का इस पेंचीला संसार में कोई कदर हो सकता है । हां, उस शरीर में अगर एक उत्तेजित जान डाल कर देखें तो वही व्यक्ति हमें बड़े से बड़े चमत्कार या अद्भुत काम कर के दिखा सकता है । यही इस युग में कुदरत की देन है । हर इनसान के अन्दर एक ऐसी ही अजीब सी शक्ति छिपी होती है जो उस को अपने करम करने को सही प्रेर्णा देती है । उस व्यक्ति को जागृत हो कर, टुक नींद से जाग कर अपने असली महत्व को पहचानने की ताकत को उत्तेजित करने की अत्यन्त जरूरी है ।

दुखः इस बात की है कि हम में से बहुत लोग अपने अन्दर की दैवी शक्ति को पहचान नहीं सकते हैं। जैसे हम बिना शीशे के सहारा लिये अपने आँख को खुद नहीं देख सकते है पर उस के चमत्कार को देख सकते हैं या बर्फ जम जाने पर पानी कहीं नजर नहीं आती इसी प्रकार हम आम लोग अपने ही भीतर की छुपी हुई पूरे सच्चाई का अनुभव सहज से नहीं कर पाते हैं। लेकिन कुछ लोगों को ईशवर ने इस प्राकृतिक व्यवस्था से सुसज्जित कर के हमारे समक्ष भेज देते हैं। वैसे ही लोगों के चमत्कार से हमारा कल्याण हो पाता है।

इस के विपरीत कुछ लोग कई कारणों से अपने आप से हताश हो कर थक जाते हैं और अपने जीवन में बहुत सी गलतियों को कर बैठते हैं। अपने कार्य को वे उपयुक्त करने के लिये या खामोशी का सहारा लेते हैं या कोई कुकरम कर के उस कार्य की सजा भुगतने के लिये तैयार हो जाते हैं। यह भी हो सकता है कि वे बुरे से बुरे कार्य को कर के कानून से बच निकलते हैं। पर उस ईशवर के संसार में इनसाफ मिलने में देर हो सकती है लेकिन अंधेर कभी नहीं होगी।

एक पढ़ा लिखा और होनहार नौजवान जिस का नाम उस के माता पिता ने बहुत सोच समझ के *भारत* रखा था, बीस साल बाद आज बिलायत से दिल्ली लौट रहा था। विलायत में उस ने कड़ी मेहनत कर के, अपने लगन और हुनर से एक बेजोड़ और अपार व्यापार का एकमात्र मालिक बन गया था। उस के पास वहां सभी साधन थे, पैसा था, जायदाद थी,

समाज में इज्ज़त थी पर वहां उस के मन को शान्ति नहीं मिलती थी और उस के दिल तथा दिमाग को सुकून देने वाली कोई भी चीज़ नजर नहीं आती थी। वह लखपति होते हुये भी बेचैन था, उसे कोई सोच या दुखः अन्दर ही अन्दर खाये जा रही थी। उसे अपने मात्रभूमि की याद तो सताती ही थी और वह अपने लोगों के लिये कुछ करना चाहता था पर इस के अलावे वह कोई बदले की आग में जल रहा था।

जब *भारत* हिन्दुस्तान छोड़ कर बिलायत गया था तब उसे यह कदम मजबूरन उठाना पड़ा था। उस समय हिन्दुस्तान ब्रिटिश सरकार के आधीन था। देश एक उपनिवेश था। अंग्रेज लोग भारतीयों को सभी प्रकार से लूट रहे थे, सता रहे थे, अपनी ताकतवर हुकूमत चला रहे थे और उन की ही बोलबाला सभी तरफ थी। *भारत* के माता पिता,गोबिन्द और यशोदा, की अपनी जमीनदारी थी जिस को अंग्रेजों ने उन से छीन लिया था और उन को बहुत सताया था।

भारत उस समय केवल बारह वर्ष का बालक था और वह तब अनाथ हो गया था,और वह बेघरबार हो गया था। उस के परिवार के लोगों को जलियनवाला बाग के मुतभेड़ में गायब कर दिया गया था। *भारत* को एक अंग्रेज पादरी मायकल ने गोद ले कर मदद की थी और उस को देश से निकाल कर बिलायत ले गया था। वहीं लनदन में पादरी मायकल के देखरेख में भारत की शिक्षा दिक्षा भी हुई थी।

जब पादरी मायकल का देहांत हो गया तब *भारत* दूसरी बार अनाथ हो गया था पर वह हिम्मत नहीं हारने वाला था क्योंकि उस के अन्दर एक अजीब सी ज्वालामुखी भड़क रही थी। पादरी मायकल ने उस के अन्दर अपने जनम भूमि की भक्ति और लगन भर दी थी। *भारत* अब पूरे तौर से देश प्रेमी और देश भक्त हो गया था। बन्दे मात्रम ही उस का एक मात्र नारा बन गया था।

यही उमंग और लगन को लेकर *भारत* आज पंद्रह सालों बाद अपने मेहनत और तजुरबे से बिलायत में घर जमीन के खरीदने बेचने के व्यापार में लग कर लाखों का मालिक बन गया था। उस ने बिलायत में दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति कर के एक करोड़पति तो बन गया था पर अपने जनम भुमि की रक्षा के लिये वह आज भी गरीब का गरीब ही रह गया था।

उस को हिन्दुस्तान लौट कर अपने लोगों के लिये कुछ कर के दिखाना था जिस से उस के मन को शान्ति मिल सके। इसी लक्षय से वह आज अपने देश लौटा था। सर्वप्रथम उस ने अपने पूजय माता पिता की खोज में लग गया था। अभी भी अंग्रेज देश को खोखला करने में लगे हुये थे पर अब उन में कुछ समझदारी आ गई थी।

000

२

कुछ भले लोगों के मदद से *भारत* ने अपने जमीनदारी को और अपने पिता को खोज ही लिया था । भारत के माता यशोदा का तो देहान्त ब्रिटिश सरकार के कैद ही में हो गया था पर उस के पिता गोविन्द के मदद से उस ने एक नई जमीनदारी हिमाचल प्रदेश के रामपुर में हिमालय पर्वत के छाये में स्थापित किया ।

हिमालय संसार का सब से ऊंचा पर्वत ही नहीं है पर उस के आसपास की धरती पवित्रता से परिपूर्ण है जहां भगवान के असीम कृपा से सभी वातावरन शुद्ध और जमीन में एक अदभुत प्राकृतिक ताक़त है । वहां की धरती धन्य है और वहां जो भी जीव जन्तु या पेड़ पौधे उगते हैं उन पर एक पवित्र दैवी शक्ति और अपूर्व दिव्य बल का असर ईशवर की महान कृपा से अनायास ही मिल जाता है ।

भारत के पिता गोविन्द ने अपने अच्छे दिनों में इस सम्पति या मिलकियत को अपने भविष्य की जरूरत के लिये सिमला नगर के पूरब में खरीद रखा था । आज वर्षों बाद ऐसे ही पुनीत स्थान पर *भारत* ने अपने नये जमीनदारी की नीव रामपुर में ड़ाली और उस आलीशान धरातल का नाम *कुदरत* रखा था । *भारत* का विशवास था कि इस नाम से उस जमीनदारी पर ऊपर वाले की असीम कृपा सदा ही बनी

रहेगी और उस में की गई कोई भी योजना या किसी भी प्रकार की खेतीबारी सदा मंगलमय और सफल ही होगी ।

भारत के लिये इस हिमाचल प्रदेश के पुनीत जायदाद मानो ईशवर की देन थी जहां की शान्त और सुन्दर वातावरन में अपना बसेरा या घर बनाना उस के लिये अति प्रसन्नता का विषय था । रामपुर के एक ऊंचे स्थान पर *भारत* ने अपना मन चाहे मकान का निर्माण कर लिया । इस स्थान से सारे जमीनदारी की शोभा नज़र आती थी । यहां की खामोशी किसी भी मन को प्रभावित कर सकती थी और *भारत* के लिये तो अब यही उस का अपना ही स्वर्ग बन गया था ।

एक तरफ गंगा नदी की अमृत जलप्रवाह और दूसरे तरफ जमुना की सभ्यता का प्रभाव होने के कारण यह धरती पर इस *कुदरत* की शक्ति या बल का महत्व को हम सहज से बखान ही नहीं कर सकते हैं । सच में यहीं पर अब *भारत* हम सब को *कुदरत* की करिशमा को दिखायेगा । आगे आगे देखिये होता है कया ।

भारत ने अपनी नई जीवन का निर्वाह इसी जमीनदारी पर करना आरम्भ किया । सब से पहले उस ने एक हांथी को लाया जिस का नाम गनेश था । सारे जायदाद में फसल लहराने लगे थे और इस *कुदरत* की शोभा पर चार चांद लग गये थे । *भारत* आज एक संतोष का सांस तो ले रहा था पर उस के लक्षय के पूरे होने में अभी भी बहुत बिलम्भ था । उस

को बिलायती सत्ता की अन्त देखना था और अपने देश की आज़ादी चाहिये थी ।

देश अभी भी अंग्रेजों के आधीन था और आजादी की कोई भी गुनजाइश नहीं थी । हिन्दुस्तानियों के लिये सभी तरह की सफलता अभी भी बड़े मुशिकल से आती थी क्योंकि सभी कार्यवाही अभी भी ब्रिटिश सरकार के हांथों में ही थी । *भारत* के पिता गोविन्द को एक चिनता सताये जा रही थी कि उस का बेटा अभी भी कुवांरा था और उस के लिये एक होनहार पतनी की खोज जारी की गई ।

भारत बड़ा भाग्यशाली था क्योंकि भगवान का आशिर्वाद उस के साथ था पर वहां के लोग *भारत* की सफलता को संदेह की नजर से देखते थे । भाग्य की रेखा उन के लिये वहमी लगती थी । *भारत* के *कुदरत* के जमीन पर वर्षा भी ठीक होती थी और उस के फसल भी सभी बाजार के फसल से बड़े और सुन्दर रहते थे । इस सफलता के लिये वहां के लोगों के पास कोई समझबूझ नहीं थी । *भारत* के *कुदरत* के चमत्कार से और अपनी मेहनत तथा लगन से वह धनी होता गया और वहां के लोग अपने जलन भाव और लापरवाही से गरीब के गरीब ही रह गये ।

फिर *भारत* के *कुदरत* पर गनेश जैसे हांथी की शक्ति भी थी । गनेश की देखभाल करने के लिये एक निपुर्ण हाथीवान या महावत नियुक्त किया गया था । हांथीवान महेश गनेश के हर एक खूबी और महत्व से भरपूर वाकिफ था तथा उस

हांथी के नस नस की असलियत से परचित था । इसीलिये गनेश का पूरा आशीर्वाद भी *कुदरत* पर सदा बना रहता था । गांव वाले तो गनेश की पूजा करते थे और उस को कितने प्रसाद भी चढ़ाते थे ।

भारत के लिये सफलता अकसमात ही आती थी । उसे इस की कोई खास खोज की जरूरत नहीं होती थी । वह केवल अपने देश के लोगों की मदद में लगा रहता था । उस ने अपने अनुसनधान द्वारा अपने *कुदरत* के खेतों में तरह तरह के औषधीय जड़ी बूटियों को उगा कर सभी देश के जरूरतमन्द लोगों तक पहुचाने की कोशिश में लगा रहता था । उन दिनो केवल अर्युवेद की औषधियों और दवा से ही आम जनता की सेवा होती थी तथा पक्षिमी दवा दारू को बहुत मानयता नहीं दी जाती थी ।

भारत के *कुदरत* के सभी दवा अब पूरे हिन्दुस्तान में ही प्रचलित नहीं पर देश विदेश में बहुत प्रसिद्ध हो चली थी ।

ooo

३

जब भारत की *कुदरत* अपने सफलता के चोटी पर पहुंची और उस के मुनाफे की कोई थाह ही नहीं रही तब भारत के पिता गोविन्द को भारत के विवाह की फिकर भी और बढ़ गई । भारत तीस वर्ष का हठा खठा होनहार और सफल नौजवान था । वह यह भी जानता था कि एक न एक दिन उस के गले में भी किसी की वरमाला पड़ेगी तथा उस की भी शादी होगी ।

पर आज तक उस के सामने किसी भी विवाह का प्रस्ताव नहीं आया था और ना ही उस ने किसी तरह की बीबी की अनुमान किया था । उस के भोजन उस के रसोइया चमनलाल पका देता था और चमनलाल की बीबी मीना अन्य नौकरों के साथ धर आंगन की सब सफाई कर देती थी । *कुदरत* के खेतों में तो कई नौकर चाकर लगे रहते थे । शाम को काम के बाद गुफतगू करने के लिये उस के महावत महेश से गपशप हो जाती थी या तो वह टहल कर गांव के एक इसाई मुख्यअध्यापक चाली के पास अपना कुछ समय गुजार कर ग्यान ध्यान की बातें कर लेता था ।

इसी तरह भारत की हर जरूरत की पूर्ति हो जाया करती थी । तब उसे बीबी की ना तो जरूरत हुई और ना ही उसे इस की कोई फिकर हुई थी । पर आज जब उस के पिता ने

उस के सामने उस के विवाह का प्रस्ताव रखा तब उस की खामोशी और भी बढ़ गई थी । वह कई छण इस के बारे में सोचता रहा और अपने आप के अंदर के विचारों से लड़ता रहा ।

पर जब उस के पिता ने यह कहा, "बेटा, तुम्हारे *कुदरत* की सफलता और तुम्हारे जीवन की उतार चढ़ाव को देखते हुये मुझे एक पिता का फर्ज निभाने का मौका मिलना चाहिये जिस से मैं तुम्हारे लिये एक योग्य पत्नी खोज सकूं । इस संसार में कोई भी सफलता बिना गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने से पूरी नहीं होती है । हर एक सफल आदमी के पीछे एक होनहार पत्नी का सहयोग होना बहुत ही जरूरी है ।" तब भारत को इस के बारे में और भी गम्भीरतापूर्वक विचार करने की जरूरत पड़ी ।

भारत ने अपने आप को एक पत्नी और बच्चों के साथ रहने की कल्पना करना शुरू किया । आज तक वह अपने लिये और अपने समाज के लिये ही जीता था तथा अपने परिवार के बारे में उस ने सोचा ही नहीं था । आज उस के पिता ने उस के अंतर आत्मा में एक नई विचार डाल दी थी । वह यह अच्छी तरह से जानता था कि एक सुपुत्र की तरह उसे उस के पिता के इस परिवारिक बोझ को हलका करना उस का फर्ज़ बनता था ।

भारत के लिये उस का विवाह एक ऐसे परिवार में होना चाहिये जिन को वह ठीक से जानता भी ना हो पर शादी के

बाद उन से दोस्ती बढ़े । उस परिवार के लोग भी भारत को एक कोरे कागज़ की तरह देख कर उस में जो भी उन के समझ में आये वही भरते जायें । इसी तरह भारत का परिवार बनेगा और आगे बढ़ेगा । यह अपरिचय का भाव सब के लिये लाभप्रद होगा । भारत ने अपने पिता को अपने विचार व्यक्त कर के विवाह की बात आगे बढ़ाने को कहा ।

जिस दिन भारत के पिता गोविन्द अपने बचपन के दोस्त मोहन सिंग के भव्य मकान पर अमृतसर पहुँचे उस दिन उस की स्वागत बड़े धूमधाम से की गई । वे दोनो मिन्त्रों ने अपने कई पुरानी कहानियों तथा यादों को ताज़ा करते हुये अपने दुख सुख एक दूसरे से बांटे । जब भारत की शादी की सिलसिला चली तब मोहन ने अपने दोनों बेटियों को उन के सामने बुलाया । सब से पहले मोहन ने अपने बड़ी पुत्री जोति का परिचय दिया ।

जोति एक सुन्दर कन्या थी जिसने अपने सर पर अपने डुपटा डाले हुये नीचे नज़र किये खड़ी थी । दूसरी छोटी बेटी प्यारी थी जो अपने बहन के हांथ पकड़ कर पास ही में खड़ी थी । प्यारी को देख कर गोविन्द को लगा था कि वही भारत के लिये योग्य पत्नी बनेगी । उन के परिचय के बाद दोनों कन्यायें बिना कुछ कहे सुने कमरे से बाहर चली गईं । दोनो पिता चाय पानी की चुसकी लेते हुये और सतरंज की खेल खेलते हुये अपने बच्चों के विवाह सम्बन्धी औपचारिक चरचा में लीन हो गये ।

उस दिन के सतरंज के खेल में जीत मोहन की हुई पर गोविन्द अपने बेटे भारत के लिये प्यारी की पसंदगी का ऐलान कर के वापस चला गया । भारत की शादी बड़े धूमधाम से हुई । उस दिन फूलों के माला और सेहरे से सजे भारत ने घूँघट में सजी अपने दुलहन को पुरोहित के बेद मन्त्रो से, सात फेरे लेकर अग्नी देवता को साक्षी कर के अपना पत्नी मान लिया था ।

जब सब संस्कार समाप्त हुये और भारत की बारात घर लौटी तब गोविन्द को यह आभास हुआ की भारत की शादी प्यारी से नहीं पर उस की बड़ी बहन जोति से हो गई थी । गोविन्द ने अपने मिन्त्र मोहन के इस चालाकी को कभी माफ नहीं कर पाये थे पर मोहन को तो पहले अपने बड़ी पुत्री का ही निपटारा करना था । दूसरे तरफ मोहन जानता था कि उस की छोटी बेटी प्यारी ने अपना एक इसाई वर खुद खोज लिया था ।

गोविन्द की खामोशी से ही परिवार की इज्जत बनी रही और इस लड़कियों के अदली बदली का पता भारत को कभी नहीं चल पाया था । अगर उस दिन भारत अपने पत्नी के घूँघट उठाते समय अपने पिता के चेहरे पर पड़े निराशा को देख और समझ पाता तो वह इस अपमानजनक और बेरहम अपराध को कभी माफ नहीं करता । इस के बदले जब गोविन्द ने अपने बेटे भारत के आंखों और चेहरे पर अपने नई नवेली दुलहन को देख कर कुल स्वीकृति देखा तब वे चुप मार कर अपने बेटे के तकदीर पर सब भविष्य की बाते

छोड़ दी । भारत के लिये कोई इस से अच्छा और दूसरा रास्ता ही नहीं था । वह अपने पिता के खवाहिश की कदर कर के पूरे रूप से संतुष्ट था । जो हुआ सो हुआ और अब उन का भविष्य कैसा होगा यही देखना था ।

भारत ने अपने परिवार के परंपरा के मुताबिक शादी के बाद घर के सभी कार्य की अधिकार अपने पत्नी जोति को सौंप दिया था और अब जोति के हांथों में पूरे *कुदरत* की देखरेख की कुन्जी थी । वह जो चाहे और जैसे चाहे खर्च कर सकती थी तथा अपनी मनमानी कर सकती थी । उसे रोकने टोकने वाला कोई नहीं था । इस आजादी को पाकर जोति के अन्दर एक अजीब सा अभिमान आ गया था ।

000

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below